मंदिर-अर्थव्यवस्था और धार्मिक पर्यटन: आंकड़े, रोज़गार, धरोहर और आगे की राह

अर्थव्यवस्था और समाज (GS-I/GS-III) | विषय-विश्लेषण: मंदिर-अर्थव्यवस्था और धार्मिक पर्यटन | समाचार संदर्भ: 23 अक्टूबर 2026 | प्रकाशित: 23 अक्टूबर 2026

विषय क्यों?

पिछले कुछ वर्षों में भारत के मंदिर-नगरों की तस्वीर बदली है। अयोध्या में राम मंदिर के निर्माण के बाद आगंतुकों की संख्या 2020 के 60,22,618 से बढ़कर 2024 में 16,44,19,522 (लगभग 16.44 करोड़) हो गई — यह आंकड़ा उत्तर प्रदेश सरकार के पर्यटन-सांख्यिकी रिकॉर्ड से पर्यटन मंत्रालय ने संसद को दिया। काशी विश्वनाथ धाम, उज्जैन का महाकाल लोक और महाकुंभ 2025 जैसी घटनाओं ने धार्मिक पर्यटन को अर्थव्यवस्था की मुख्यधार की चर्चा में ला दिया है। परीक्षा की दृष्टि से यह विषय GS-I (समाज, धरोहर) और GS-III (अर्थव्यवस्था, रोज़गार, बुनियादी ढाँचा) दोनों से जुड़ता है।



मौलिक प्रतीकात्मक चित्र: pcsmantra.com

मंदिर-अर्थव्यवस्था क्या है?

मंदिर-अर्थव्यवस्था (temple economy) से तात्पर्य उस आर्थिक गतिविधि के पूरे चक्र से है जो किसी प्रमुख मंदिर या तीर्थ-क्षेत्र के इर्द-गिर्द चलती है — यात्रियों का आना, ठहरना, खाना-पीना, स्थानीय परिवहन, प्रसाद-फूल-पूजा-सामग्री का बाजार, कारीगरी और

निर्माण, मंदिर-ट्रस्ट का खर्च और सरकारी निवेश। यह कोई औपचारिक सरकारी शब्द नहीं, बल्कि इस चक्र को समझने का विश्लेषणात्मक ढाँचा है।

पृष्ठभूमि के तौर पर: 2023-24 (अनंतिम) में पर्यटन की भारत की GDP में हिस्सेदारी 5.22% अनुमानित थी, और पर्यटन से जुड़े प्रत्यक्ष व अप्रत्यक्ष रोज़गार की संख्या 8.463 करोड़ (84.63 मिलियन, PLFS आकलन) थी। 2023 में घरेलू पर्यटन-भ्रमण (domestic tourist visits) 251 करोड़ (2.51 बिलियन) रहे — इनमें तीर्थ-यात्रा की हिस्सेदारी सबसे बड़ी मानी जाती है, यद्यपि मंत्रालय उद्देश्य-वार अलग प्रतिशत प्रकाशित नहीं करता।

आंकड़ों में तीन बड़े उदाहरण

- **अयोध्या (उत्तर प्रदेश):** ज़िले के आगंतुक 2020 में 60.23 लाख से बढ़कर 2024 में 16.44 करोड़ — राज्य सरकार के पर्यटन-आंकड़े, संसद में पर्यटन मंत्रालय के उत्तर में उद्धृत।
- **महाकुंभ 2025, प्रयागराज:** 45 दिनों में 66.30 करोड़ से अधिक श्रद्धालुओं ने स्नान किया (उत्तर प्रदेश सूचना एवं जनसंपर्क विभाग के हवाले से PIB)। आयोजन के लिए 15,000 से अधिक सफाईकर्मी और 2,000 ‘गंगा सेवा दूत’ लगे; 1.5 लाख से अधिक अस्थायी शौचालय बनाए गए — यह दिखाता है कि तीर्थ-आयोजन सेवा-क्षेत्र की कितनी बड़ी अस्थायी अर्थव्यवस्था खड़ी करता है।
- **काशी (वाराणसी):** श्री काशी विश्वनाथ धाम चरण-1 लगभग ₹339 करोड़ में बना; परिसर-क्षेत्र लगभग 3,000 वर्ग फीट से बढ़कर 5 लाख वर्ग फीट हुआ, 23 नई सुविधा-इमारतें बनीं, 300 से अधिक संपत्तियों का अधिग्रहण और लगभग 1,400 दुकानदारों-किरायेदारों का पुनर्वास बिना मुकदमे के हुआ। 2014 से मार्च 2025 तक काशी विकास के अंतर्गत 580 परियोजनाओं में कुल ₹48,459 करोड़ का निवेश दर्ज किया गया (PIB, अप्रैल 2025)। शहर की सड़क-संपर्कता पर हमारा संबंधित लेख पढ़ें: वाराणसी के दो एलिवेटेड कॉरिडोर।
- **उज्जैन (मध्य प्रदेश):** महाकाल लोक परियोजना की कुल लागत लगभग ₹850 करोड़; मंदिर-परिक्षेत्र लगभग सात गुना विस्तारित हुआ और मंदिर का तत्कालीन वार्षिक पदयात्री-आगमन लगभग 1.5 करोड़ था, जिसे दोगुना होने का अनुमान व्यक्त किया गया (PIB, अक्टूबर 2022)।

रोज़गार और आजीविका के मार्ग

तीर्थ-अर्थव्यवस्था में रोज़गार कई परतों में बनता है: होटल-धर्मशाला और होमस्टे; परिवहन (रेल-बस-टैक्सी-नौका); गाइड, पांडा-पुजारी और सेवा-कर्मी; प्रसाद, फूल, अगरबत्ती, हस्तशिल्प और स्थानीय खाद्य-उद्योग; निर्माण और रखरखाव; तथा आयोजन-कालीन अस्थायी काम (सफाई, सुरक्षा, टेंट-सिटी)। काशी में गंगा के उस पार टेंट सिटी (जनवरी 2023 से) इसी बढ़ते प्रवाह को संभालने के लिए बनाई गई। इनमें से अधिकांश काम अनौपचारिक क्षेत्र में होता है — यही बात आगे चुनौतियों में भी आती है।

संस्कृति और धरोहर का संरक्षण

मंदिर-क्षेत्रों का विकास केवल ईंट-पत्थर नहीं है। काशी विश्वनाथ धाम परियोजना में 40 से अधिक प्राचीन मंदिर फिर से खोजे गए, उनका जीर्णोद्धार और सौंदर्यीकरण हुआ। सारनाथ जैसे धरोहर-स्थलों के प्रकाश-सौंदर्यीकरण (2015 में धामेख स्तूप समेत ₹5.12 करोड़ स्वीकृत) पर हमारा संबंधित लेख: सारनाथ को विश्व धरोहर दर्जा: फ़ैसला और उसके साथ छह। काशी तमिल संगमम जैसे आयोजन तीर्थ-नगरों को जीवंत सांस्कृतिक मंच भी बनाते हैं — विवरण: काशी तमिल संगमम 5.0।

शासन और योजनाएँ

- **प्रसाद (PRASHAD) योजना** — "Pilgrimage Rejuvenation and Spiritual, Heritage Augmentation Drive": पर्यटन मंत्रालय की केंद्रीय-क्षेत्र योजना जो चिन्हित तीर्थ और धरोहर स्थलों के पर्यटन-बुनियादी ढाँचे के लिए राज्यों/केंद्र-शासित प्रदेशों को वित्तीय सहायता देती है। जुलाई 2025 तक 54 परियोजनाएँ, अनुमानित लागत ₹1726.74 करोड़ (संसद में दी गई जानकारी)।
- **SASCI** — "Special Assistance to States for Capital Investment" (आइकॉनिक पर्यटन-केंद्र): 23 राज्यों की 40 परियोजनाएँ, ₹3295.76 करोड़ स्वीकृत।
- **स्वदेश दर्शन 2.0:** गंतव्य-केंद्री सतत विकास के लिए 29 परियोजनाएँ, ₹644 करोड़ (अगस्त 2024)।
- **संपर्कता:** UDAN क्षेत्रीय कनेक्टिविटी के तहत 53 पर्यटन-मार्ग चालू; सोमनाथ क्षेत्र में केशोद हवाईअड्डे का विस्तार और अहमदाबाद-वेरावल वंदे भारत से पहुँच सुधरी (PIB, जनवरी 2026)।
- **ट्रस्ट-शासन:** बड़े मंदिर-ट्रस्टों की जवाबदेही और पारदर्शिता अर्थव्यवस्था का हिस्सा है — हमारा संबंधित विश्लेषण: राम मंदिर ट्रस्ट: ढाँचा, जवाबदेही और शासन-सुधार।

चुनौतियाँ

- **वहन-क्षमता (carrying capacity):** किसी स्थल पर एक समय कितने यात्री सुरक्षित और टिकाऊ ढंग से रह सकते हैं — भीड़-प्रबंधन, पेयजल और स्वच्छता पर दबाव। महाकुंभ के बाद 15 दिन का विशेष सफाई-अभियान और कूड़े का वैज्ञानिक निस्तारण करना पड़ा; यह दिखाता है कि पारिस्थितिक लागत वास्तविक है।
- **अनौपचारिकता:** अधिकांश रोज़गार मौसमी और असंगठित है; सामाजिक सुरक्षा और स्थिर आय का अभाव।
- **स्थानीय लाभ-भागीदारी:** बड़े निवेश का लाभ स्थानीय छोटे व्यवसायों तक पहुँचे, यह सुनिश्चित करना नीतिगत चुनौती है।
- **आंकड़ों की कमी:** तीर्थ-पर्यटन की अलग, नियमित और तुलनीय सांख्यिकी उपलब्ध नहीं; कई आंकड़े अनुमान या अध-सरकारी हैं।

आगे की राह

- हर प्रमुख तीर्थ-क्षेत्र के लिए वहन-क्षमता का वैज्ञानिक आकलन और भीड़-प्रबंधन की डिजिटल योजना।
- अस्थायी/मौसमी कामगारों को सामाजिक-सुरक्षा और कौशल-प्रमाणन से जोड़ना।
- ठोस-अपशिष्ट और पेयजल की स्थायी व्यवस्था (महाकुंभ की सफाई-मशीनरी को शहरी तंत्र में समेटना)।
- धरोहर-प्रभाव मूल्यांकन अनिवार्य करना, ताकि विकास-कार्यों से प्राचीन स्वरूप सुरक्षित रहे।
- तीर्थ-पर्यटन की मानकीकृत वार्षिक सांख्यिकी, जिससे नीति-निर्माण प्रमाण-आधारित हो।

परीक्षा की दृष्टि से

- **प्रारंभिक परीक्षा नगेट्स:** PRASHAD योजना = पर्यटन मंत्रालय, तीर्थ/धरोहर स्थलों का बुनियादी ढाँचा; जुलाई 2025 तक 54 परियोजनाएँ (₹1726.74 करोड़)। महाकुंभ 2025 = 66.30 करोड़ स्नानार्थी, 45 दिन, प्रयागराज। काशी विश्वनाथ धाम चरण-1 ≈ ₹339 करोड़, दिसंबर 2021। महाकाल लोक, उज्जैन ≈ ₹850 करोड़, चरण-1 अक्टूबर 2022। पर्यटन की GDP में हिस्सेदारी 5.22% (2023-24, अनंतिम)।
- **मुख्य परीक्षा (GS-I):** धार्मिक-सांस्कृतिक धरोहर का संरक्षण और आधुनिकीकरण का तनाव; तीर्थ-नगरों का सामाजिक पुनरुद्धार।

- **मुख्य परीक्षा (GS-III):** पर्यटन-आधारित समावेशी विकास; सेवा-क्षेत्र में रोज़गार-सृजन; बुनियादी ढाँचा और क्षेत्रीय संपर्कता का आर्थिक प्रभाव।

मुख्य परीक्षा अभ्यास प्रश्न

"तीर्थ-पर्यटन का तेज़ विस्तार भारत में रोज़गार और क्षेत्रीय विकास का बड़ा इंजन बन रहा है, परंतु वहन-क्षमता और धरोहर-संरक्षण की चुनौतियाँ भी उतनी ही वास्तविक हैं। आंकड़ों के आलोक में चर्चा कीजिए।" (250 शब्द)

उत्तर की रूपरेखा:

भूमिका में: मंदिर-अर्थव्यवस्था (temple economy) को परिभाषित करें: किसी प्रमुख मंदिर या तीर्थ-क्षेत्र के इर्द-गिर्द चलने वाली आर्थिक गतिविधि का पूरा चक्र, जो औपचारिक सरकारी शब्द नहीं बल्कि विश्लेषण का ढाँचा है। एक-दो आँकड़े रखें, जैसे अयोध्या के आगंतुक 2020 के 60,22,618 से 2024 में लगभग 16.44 करोड़ (उत्तर प्रदेश के पर्यटन-आँकड़े, पर्यटन मंत्रालय द्वारा संसद में उद्धृत), और 2023-24 (अनंतिम) में पर्यटन की GDP में हिस्सेदारी 5.22%।

मुख्य भाग में: पहले खंड में रोज़गार और क्षेत्रीय विकास के पक्ष रखें: महाकुंभ 2025 में 45 दिनों में 66.30 करोड़ से अधिक स्नानार्थी, काशी विश्वनाथ धाम चरण-1 (लगभग ₹339 करोड़), महाकाल लोक (लगभग ₹850 करोड़), पर्यटन से जुड़ा रोज़गार 8.463 करोड़ (PLFS आकलन), तथा होटल, परिवहन, प्रसाद-फूल और आयोजन-कालीन अस्थायी कामों की परतें। दूसरे खंड में चुनौतियाँ रखें: वहन-क्षमता (महाकुंभ के बाद विशेष सफाई-अभियान), अनौपचारिक और मौसमी रोज़गार, स्थानीय लाभ-भागीदारी और धरोहर-संरक्षण (काशी में 40 से अधिक प्राचीन मंदिरों का जीर्णोद्धार)। आँकड़ों की सीमा बताएँ: तीर्थ-पर्यटन की अलग उद्देश्य-वार सांख्यिकी प्रकाशित नहीं होती, महाकाल लोक का "दोगुना आगमन" अनुमान है, और तीर्थ-यात्रा की सबसे बड़ी हिस्सेदारी का कथन गुणात्मक है। निजी या उद्योग-मंडल के अनुमान और लेख में न दिए गए आँकड़े न जोड़ें।

निष्कर्ष में: आगे की राह सुझाएँ: वहन-क्षमता का वैज्ञानिक आकलन और भीड़-प्रबंधन, अस्थायी कामगारों को सामाजिक-सुरक्षा और कौशल-प्रमाणन से जोड़ना, ठोस-अपशिष्ट और पेयजल की स्थायी व्यवस्था, धरोहर-प्रभाव मूल्यांकन और मानकीकृत वार्षिक सांख्यिकी। निष्कर्ष में कहें कि अवसर बड़ा है, पर वह टिकाऊ तभी होगा जब वहन-क्षमता और धरोहर-संरक्षण को विकास के साथ रखा जाए।

स्रोत और सीमाएँ

- पर्यटन मंत्रालय/PIB, 16 मार्च 2026 (पढ़ा; GDP हिस्सेदारी 5.22% 2023-24 अनंतिम, रोज़गार 84.63 मिलियन PLFS, DTV 2.51 बिलियन 2023, FTA 9.95 मिलियन 2024): pib.gov.in PRID 2240657
- PIB, 3 मार्च 2025 (पढ़ा; महाकुंभ 2025: 66.30 करोड़ स्नानार्थी, 45 दिन, 15,000+ सफाईकर्मी, 1.5 लाख+ शौचालय; स्रोत उ.प्र. सूचना एवं जनसंपर्क विभाग): pib.gov.in PRID 2107843
- PIB, 3 फरवरी 2025 (पढ़ा; अयोध्या आगंतुक 60,22,618 (2020) → 164,419,522 (2024), उ.प्र. पर्यटन-सांख्यिकी; PRASHAD तत्कालीन स्थिति): pib.gov.in PRID 2099155
- PIB, 31 जुलाई 2025 (पढ़ा; PRASHAD 54 परियोजनाएँ ₹1726.74 करोड़; SASCI 40 परियोजनाएँ ₹3295.76 करोड़, 23 राज्य): pib.gov.in PRID 2150705
- PIB, दिसंबर 2021 (पढ़ा; काशी विश्वनाथ धाम चरण-1 ≈₹339 करोड़, 5 लाख वर्ग फीट, 23 इमारतें, 300+ संपत्तियाँ, ~1,400 पुनर्वास): pib.gov.in PRID 1780650; PIB दस्तावेज़, अप्रैल 2025 (काशी विकास 580 परियोजनाएँ ₹48,459 करोड़, 2014-मार्च 2025): Kashi: Ringing the Bells of Progress
- PIB, अक्टूबर 2022 (पढ़ा; महाकाल लोक कुल परियोजना ≈₹850 करोड़, परिक्षेत्र ~7 गुना, पदयात्री-आगमन ~1.5 करोड़/वर्ष दोगुना होने का अनुमान): pib.gov.in PRID 1866910

- PIB, 8 अगस्त 2024 (पढ़ा; स्वदेश दर्शन 2.0: 29 परियोजनाएँ ₹644 करोड़; UDAN 53 पर्यटन-मार्ग): pib.gov.in PRID 2043017
- PIB, 11 जनवरी 2026 (पढ़ा; सोमनाथ क्षेत्र: केशोद हवाईअड्डा विस्तार, अहमदाबाद-वेरावल वंदे भारत, तीर्थ-सर्किट, सोमनाथ संस्कृत विश्वविद्यालय): pib.gov.in PRID 2213388
- **सीमाएँ:** तीर्थ-पर्यटन की अलग उद्देश्य-वार प्रतिशत-सांख्यिकी मंत्रालय प्रकाशित नहीं करता, इसलिए "सबसे बड़ी हिस्सेदारी" का कथन गुणात्मक है। महाकाल लोक का "दोगुना आगमन" अधिकारियों का अनुमान है, प्राप्त आंकड़ा नहीं। किसी भी प्राइवेट-सेक्टर/उद्योग-मंडल के आर्थिक-प्रभाव अनुमान (जैसे महाकुंभ के ₹2 लाख करोड़ के उद्योग-अनुमान) सरकारी सत्यापन के अभाव में शामिल नहीं किए गए। धार्मिक आय/दान के आंकड़े केंद्रीयकृत रूप से प्रकाशित नहीं होते, इसलिए वह पहलू छूटा है।

अक्सर पूछे जाने वाले प्रश्न (FAQ)

संक्षिप्त उत्तर: मंदिर-अर्थव्यवस्था (temple economy) से तात्पर्य उस आर्थिक गतिविधि के पूरे चक्र से है जो किसी प्रमुख मंदिर या तीर्थ-क्षेत्र के इर्द-गिर्द चलती है - यात्रियों का आना, ठहरना, खाना-पीना, स्थानीय परिवहन, प्रसाद-फूल-पूजा-सामग्री का बाजार, कारीगरी और निर्माण, मंदिर-ट्रस्ट का खर्च और सरकारी निवेश। यह कोई औपचारिक सरकारी शब्द नहीं, बल्कि इस चक्र को समझने का विश्लेषणात्मक ढाँचा है।

प्रश्न: मंदिर-अर्थव्यवस्था का क्या अर्थ है?

मंदिर-अर्थव्यवस्था (temple economy) से तात्पर्य उस आर्थिक गतिविधि के पूरे चक्र से है जो किसी प्रमुख मंदिर या तीर्थ-क्षेत्र के इर्द-गिर्द चलती है - यात्रियों का आना, ठहरना, खाना-पीना, स्थानीय परिवहन, प्रसाद-फूल-पूजा-सामग्री का बाजार, कारीगरी और निर्माण, मंदिर-ट्रस्ट का खर्च और सरकारी निवेश। यह कोई औपचारिक सरकारी शब्द नहीं, बल्कि इस चक्र को समझने का विश्लेषणात्मक ढाँचा है।

प्रश्न: तीर्थ-अर्थव्यवस्था में रोजगार किन क्षेत्रों में बनता है?

तीर्थ-अर्थव्यवस्था में रोज़गार कई परतों में बनता है: होटल-धर्मशाला और होमस्टे; परिवहन (रेल-बस-टैक्सी-नौका); गाइड, पांडा-पुजारी और सेवा-कर्मी; प्रसाद, फूल, अगरबत्ती, हस्तशिल्प और स्थानीय खाद्य-उद्योग; निर्माण और रखरखाव; तथा आयोजन-कालीन अस्थायी काम (सफाई, सुरक्षा, टेंट-सिटी)। काशी में गंगा के उस पार टेंट सिटी (जनवरी 2023 से) इसी बढ़ते प्रवाह को संभालने के लिए बनाई गई। इनमें से अधिकांश काम अनौपचारिक क्षेत्र में होता है - यही बात आगे चुनौतियों में भी आती है।

प्रश्न: मंदिर-क्षेत्रों का विकास धरोहर-संरक्षण से कैसे जुड़ता है?

मंदिर-क्षेत्रों का विकास केवल ईंट-पत्थर नहीं है। काशी विश्वनाथ धाम परियोजना में 40 से अधिक प्राचीन मंदिर फिर से खोजे गए, उनका जीर्णोद्धार और सौंदर्यीकरण हुआ।